International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

शर्मिष्ठा, पी एच डी, शोध छात्रा, शिक्षा विभाग, गीता विश्वविद्यालय, पानीपत, हरियाणा
डॉ. ओमप्रकाश सह-आचार्य, शिक्षा विभाग, गीता विश्वविद्यालय, पानीपत, हरियाणा

SARMISHTHA[1], Dr. OMPARKASH[2]
1 PhD Research Scholar, Department of Education, Geeta University, Panipat Haryana
2 Associate Professor, Department of Education, Geeta University, Panipat Haryana

Bhimrao Ambedkar's Education Philosophy and Its Importance

भीमराव अम्बेडकर का शिक्षा दर्शन एवं उनका महत्व

सार

भीमराव अंबेडकर, जिन्हें प्यार से बाबासाहेब के नाम से याद किया जाता है, न केवल भारतीय संविधान के निर्माता थे बल्कि सामाजिक न्याय, समानता और शिक्षा के कट्टर समर्थक भी थे। समानता, पहुंच और सशक्तिकरण के सिद्धांतों में गहराई से निहित उनका शिक्षा दर्शन समकालीन समाज में प्रासंगिक और महत्वपूर्ण बना हुआ है। यह शोध पत्र अम्बेडकर के शिक्षा दर्शन, इसके प्रमुख सिद्धांतों और आधुनिक शैक्षिक विमर्श को आकार देने और सामाजिक प्रगति को बढ़ावा देने में इसके स्थायी महत्व पर प्रकाश डालता है।

परिचय:

डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर, जिन्हें बाबासाहेब अम्बेडकर के नाम से जाना जाता है, भारतीय इतिहास में एक महान व्यक्ति थे, जो सामाजिक सुधार, कानून और शिक्षा में अपने बहुमुखी योगदान के लिए प्रसिद्ध थे। 14 अप्रैल, 1891 को मध्य प्रदेश के महू में जन्मे अंबेडकर हाशिये पर पड़े दलित समुदाय से थे, जिन्हें भारत में प्रचलित जाति-आधारित सामाजिक पदानुक्रम के तहत प्रणालीगत भेदभाव और उत्पीड़न का सामना करना पड़ा।

अपने पूरे जीवन में भारी बाधाओं और भेदभाव का सामना करने के बावजूद, अम्बेडकर की ज्ञान की निरंतर खोज और सामाजिक न्याय के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता ने उन्हें 20 वीं सदी के सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक बनने के लिए प्रेरित किया। वह हाशिए पर रहने वाले समुदायों, विशेषकर दलितों के अधिकारों और सम्मान की वकालत करने वाले एक प्रमुख नेता के रूप में उभरे और मसौदा समिति के अध्यक्ष के रूप में भारतीय संविधान का मसौदा तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अम्बेडकर के जीवन और योगदान में कानून, अर्थशास्त्र, राजनीति और सामाजिक सुधार सहित कई क्षेत्र शामिल हैं। हालाँकि, उनके दर्शन और सक्रियता को रेखांकित करने वाले केंद्रीय विषयों में से एक शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति थी। अम्बेडकर के लिए, शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं बल्कि मुक्ति, सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन का एक साधन थी।

अंबेडकर के विचारों में शिक्षा का केंद्रीय स्थान था, क्योंकि उन्होंने जाति-आधारित भेदभाव की बेड़ियों को तोड़ने और समाज के उत्पीड़ित वर्गों के उत्थान की इसकी क्षमता को पहचाना था। उनका दृढ़

© 2024, IRJEdT Volume: 06 Issue: 04 |April-2024

विश्वास था कि शिक्षा व्यक्तियों को सामाजिक असमानताओं के चंगुल से मुक्त कराने और उन्हें उनकी पूरी क्षमता का एहसास करने में सक्षम बनाने की कुंजी है।

अपने पूरे जीवन में, अंबेडकर ने शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच की अथक वकालत की, विशेष रूप से हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए जो ऐतिहासिक रूप से शैक्षिक अवसरों से वंचित थे। उन्होंने शिक्षा को जाति-आधारित भेदभाव और असमानता के खिलाफ लड़ाई में एक शक्तिशाली हथियार के रूप में देखा, इसे सामाजिक न्याय और समानता के मार्ग के रूप में देखा।

शिक्षा के बारे में अम्बेडकर का दृष्टिकोण केवल अकादमिक ज्ञान प्राप्त करने से कहीं आगे तक फैला हुआ था। उन्होंने शिक्षार्थियों के बीच आलोचनात्मक सोच, तर्कसंगतता और नैतिक मूल्यों की खेती पर जोर दिया, जिसका लक्ष्य प्रचलित सामाजिक मानदंडों और अन्यायों पर सवाल उठाने में सक्षम जिम्मेदार नागरिकों का पोषण करना था।

संक्षेप में, अम्बेडकर का जीवन और कार्य सामाजिक न्याय, समानता और मानवीय गरिमा को आगे बढ़ाने में शिक्षा के गहन महत्व को रेखांकित करता है। समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा के लिए उनकी वकालत समकालीन समय में भी गूंजती रहती है, सामाजिक सुधार के लिए आंदोलनों को प्रेरित करती है और दुनिया भर में हाशिए पर रहने वाले समुदायों को सशक्त बनाती है। जैसे-जैसे हम अंबेडकर के शिक्षा दर्शन में गहराई से उतरते हैं, हम उन शाश्वत अंतर्दृष्टि और सिद्धांतों को उजागर करते हैं जो एक अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज के लिए हमारी चल रही खोज में अत्यधिक प्रासंगिक हैं।

भीमराव अम्बेडकर का शिक्षा दर्शन:

बाबासाहेब अम्बेडकर का शिक्षा दर्शन सामाजिक न्याय, समानता और सशक्तिकरण के उनके दृष्टिकोण में गहराई से निहित था। उन्होंने शिक्षा को मुक्ति के लिए एक शक्तिशाली साधन के रूप में पहचाना, जो व्यक्तियों को उत्पीड़न की जंजीरों से मुक्त होने और उनकी पूरी क्षमता का एहसास करने में सक्षम बनाता है। अम्बेडकर के शिक्षा दर्शन में कई प्रमुख सिद्धांत शामिल हैं:

मुक्ति और सशक्तिकरण के साधन के रूप में शिक्षा पर जोर:

अम्बेडकर का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं है बल्कि मुक्ति और सशक्तिकरण का मार्ग है। उन्होंने शिक्षा को हाशिए पर रहने वाले समुदायों, विशेषकर दलितों के उत्थान के लिए एक उपकरण के रूप में देखा और उन्हें समाज में अपने अधिकारों और सम्मान पर जोर देने में सक्षम बनाया। अम्बेडकर के लिए, शिक्षा गरीबी, भेदभाव और सामाजिक बहिष्कार के दुष्चक्र को तोड़ने में सहायक थी।

जाति, पंथ या लिंग के बावजूद शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच की वकालत:

अम्बेडकर ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्रचलित भेदभावपूर्ण प्रथाओं का पुरजोर विरोध किया, जिसने व्यवस्थित रूप से हाशिए पर रहने वाले समुदायों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँचने से बाहर कर दिया। उन्होंने जाति, पंथ या लिंग की परवाह किए बिना सभी के लिए समान शैक्षिक अवसरों की वकालत की। शैक्षिक अधिकारों के लिए अंबेडकर के अथक संघर्ष ने शैक्षिक संस्थानों में हाशिए पर रहने वाले समूहों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए सकारात्मक कार्रवाई नीतियों और आरक्षण का मार्ग प्रशस्त किया।

पारंपरिक पदानुक्रमित शिक्षा प्रणालियों की अस्वीकृति और योग्यता पर जोर:

© 2024, IRJEdT Volume: 06 Issue: 04 |April-2024

अम्बेडकर ने पारंपरिक पदानुक्रमित शिक्षा प्रणालियों की आलोचना की जो सामाजिक असमानताओं को कायम रखती थी और समाज के विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों का पक्ष लेती थी। उन्होंने योग्यता-आधारित शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना का आह्वान किया जो सभी व्यक्तियों को उनकी सामाजिक या आर्थिक पृष्ठभूमि के बजाय उनकी क्षमताओं और प्रतिभा के आधार पर समान अवसर प्रदान करेंगे। अंबेडकर ने एक ऐसे समाज की कल्पना की थी जहां योग्यतातंत्र कायम होगा, जिससे व्यक्तियों को उनकी योग्यता और क्षमता के आधार पर नेतृत्व और प्रभाव के पदों पर पहुंचने की इजाजत मिलेगी।

आलोचनात्मक सोच, तर्कसंगतता और वैज्ञानिक स्वभाव को बढ़ावा देना:

अम्बेडकर ने शिक्षार्थियों के बीच आलोचनात्मक सोच, तर्कसंगतता और वैज्ञानिक स्वभाव को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर दिया। उनका मानना था कि शिक्षा को व्यक्तियों को स्थापित मान्यताओं पर सवाल उठाने, पारंपरिक मानदंडों को चुनौती देने और साक्ष्य-आधारित तर्क में संलग्न होने में सक्षम बनाना चाहिए। अम्बेडकर ने अंधविश्वास, हठधर्मिता और अज्ञानता से निपटने के लिए आलोचनात्मक सोच को आवश्यक माना, जो सामाजिक प्रगति और ज्ञानोदय में बाधक था।

सामाजिक एकता और लोकतंत्र को बढ़ावा देने में शिक्षा की भूमिका की मान्यता:

अम्बेडकर ने सामाजिक एकता, सद्भाव और लोकतंत्र को बढ़ावा देने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचाना। उनका मानना था कि समानता, न्याय और भाईचारे के सिद्धांतों पर आधारित एक जीवंत लोकतांत्रिक समाज के निर्माण के लिए एक शिक्षित नागरिक आवश्यक है। अम्बेडकर ने शिक्षा की कल्पना विभिन्न समुदायों के बीच सहिष्णुता, समझ और पारस्परिक सम्मान को बढ़ावा देने के साधन के रूप में की, जिससे राष्ट्र का ताना-बाना मजबूत हो।

संक्षेप में, भीमराव अम्बेडकर का शिक्षा दर्शन सामाजिक न्याय, समानता और सशक्तिकरण के सिद्धांतों पर आधारित था। मुक्ति, सार्वभौमिक पहुंच, योग्यता, आलोचनात्मक सोच और लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए एक उपकरण के रूप में शिक्षा की उनकी दृष्टि पीढ़ियों को प्रेरित करती रहती है और अधिक न्यायसंगत और समावेशी समाज के लिए चल रहे संघर्ष में मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में कार्य करती है।

भीमराव अम्बेडकर के शिक्षा दर्शन का महत्व-

सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना:

अम्बेडकर का शिक्षा दर्शन समकालीन समाज में सामाजिक न्याय और समानता को बढ़ावा देने के लिए एक प्रकाशस्तंभ के रूप में कार्य करता है। जाति, पंथ या लिंग की परवाह किए बिना सभी के लिए शिक्षा तक समान पहुंच पर उनका जोर, शैक्षिक असमानताओं और जाति-आधारित भेदभाव को संबोधित करने के उद्देश्य से आंदोलनों को प्रेरित करता है। समान शैक्षिक अवसरों की वकालत करके, अम्बेडकर का दर्शन अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी समाज के लिए चल रहे संघर्ष में योगदान देता है।

हाशिए पर रहने वाले समुदायों का सशक्तिकरण:

अम्बेडकर का शिक्षा दर्शन शिक्षा को सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए एक परिवर्तनकारी उपकरण के रूप में मान्यता देकर हाशिए पर रहने वाले समुदायों को सशक्त बनाना जारी रखता है। शिक्षा के माध्यम से, हाशिए की पृष्ठभूमि के व्यक्ति सामाजिक असमानताओं को चुनौती देने और अपने अधिकारों का दावा करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और आत्मविश्वास प्राप्त कर सकते हैं। सशक्तिकरण के साधन के रूप

© 2024, IRJEdT Volume: 06 Issue: 04 |April-2024

में शिक्षा पर अम्बेडकर का जोर हाशिए पर रहने वाले समुदायों को गरीबी और भेदभाव के चक्र से मुक्त होने के लिए सशक्त बनाने में प्रासंगिक बना हुआ है।

समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देना:

अम्बेडकर की समावेशी शिक्षा की दृष्टि सीखने के ऐसे वातावरण बनाने के महत्व को रेखांकित करती है जो सभी शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करता है। शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच के लिए उनकी वकालत समावेशी प्रथाओं को बढ़ावा देती है जो विविध सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के शिक्षार्थियों को समायोजित करती है। समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देकर, अम्बेडकर का दर्शन यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी व्यक्ति पीछे न छूटे और प्रत्येक शिक्षार्थी को आगे बढ़ने और सफल होने का अवसर मिले।

लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देना:

अम्बेडकर का शिक्षा दर्शन समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व जैसे लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देता है, सूचित और जिम्मेदार नागरिकों का पोषण करता है। आलोचनात्मक सोच, तर्कसंगतता और वैज्ञानिक स्वभाव की खेती पर जोर देकर, अंबेडकर का दर्शन एक शिक्षित नागरिक को बढ़ावा देता है जो लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग लेने और लोकतांत्रिक सिद्धांतों को बनाए रखने में सक्षम है। लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देने के एक उपकरण के रूप में शिक्षा के बारे में उनका दृष्टिकोण लोकतांत्रिक संस्थानों को मजबूत करने और लोकतांत्रिक आदर्शों के संरक्षण में योगदान देता है।

समसामयिक शिक्षा में प्रासंगिकता:

अम्बेडकर के विचार समकालीन समय में शैक्षिक नीतियों और प्रथाओं पर गहरा प्रभाव डालते हैं। शिक्षा प्रणालियों में सामाजिक समावेश, विविधता और समानता पर उनका जोर प्रणालीगत असमानताओं को दूर करने और सभी के लिए शैक्षिक पहुंच को बढ़ावा देने के प्रयासों के साथ मेल खाता है। अंबेडकर का शिक्षा दर्शन शैक्षिक हस्तक्षेपों को डिजाइन करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है जो हाशिए पर रहने वाले समुदायों की जरूरतों को प्राथमिकता देता है और समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा प्रणालियों को बढ़ावा देता है।

भीमराव अंबेडकर का शिक्षा दर्शन सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने, हाशिये पर पड़े समुदायों को सशक्त बनाने, समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने, लोकतांत्रिक मूल्यों का पोषण करने और अधिक समानता और समावेशन की दिशा में समकालीन शैक्षिक सुधारों का मार्गदर्शन करने में अत्यधिक महत्व रखता है। चूँकि हम लगातार शैक्षिक चुनौतियों से जूझ रहे हैं और एक अधिक न्यायसंगत और न्यायसंगत समाज के लिए प्रयास कर रहे हैं, अंबेडकर के विचार शैक्षिक उत्कृष्टता और सामाजिक प्रगति की हमारी सामूहिक खोज में प्रेरणा और मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में काम करते हैं।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः, भीमराव अम्बेडकर का शिक्षा दर्शन सामाजिक न्याय, समानता और सशक्तिकरण की एक शक्तिशाली दृष्टि का प्रतीक है। मुक्ति के साधन के रूप में शिक्षा पर उनका जोर, शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच की वकालत, पदानुक्रमित शिक्षा प्रणालियों की अस्वीकृति, आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना, और सामाजिक एकजुटता और लोकतंत्र को बढ़ावा देने में शिक्षा की भूमिका की मान्यता केंद्रीय सिद्धांत हैं जो समकालीन समाज में गूंजते रहते हैं।

© 2024, IRJEdT Volume: 06 Issue: 04 |April-2024

अम्बेडकर का शिक्षा दर्शन शैक्षिक असमानता, भेदभाव और बहिष्कार की लगातार चुनौतियों का समाधान करने में उनके विचारों के स्थायी महत्व और प्रासंगिकता को रेखांकित करता है। जैसे-जैसे समाज गहरी जड़ें जमा चुकी असमानताओं से जूझ रहा है और शिक्षा में अधिक समावेशिता और समानता के लिए प्रयास कर रहा है, अम्बेडकर का दर्शन परिवर्तनकारी परिवर्तन की दिशा में एक मार्गदर्शक प्रकाश प्रदान करता है।

अंबेडकर के शिक्षा दर्शन के महत्व और शिक्षा में नीति और व्यवहार को सूचित करने की इसकी क्षमता को पहचानना अनिवार्य है। सभी शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने वाली समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा प्रणालियों को बढ़ावा देने के लिए अंबेडकर के विचारों पर और अधिक शोध और कार्यान्वयन की तत्काल आवश्यकता है। अंबेडकर के शिक्षा के दृष्टिकोण को अपनाकर, हम सीखने का ऐसा माहौल बनाने की दिशा में काम कर सकते हैं जो व्यक्तियों को सशक्त बनाता है, सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देता है और लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखता है।

निष्कर्षतः, भीमराव अम्बेडकर का शिक्षा दर्शन सामाजिक न्याय और समानता के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है। जैसे-जैसे हम समकालीन शिक्षा की जटिलताओं से निपटते हैं, आइए हम अंबेडकर के विचारों से प्रेरणा लें और सभी के लिए अधिक न्यायपूर्ण, समावेशी और समान समाज के निर्माण की दिशा में प्रयास करें।

शोध ग्रन्थ सूचि :

1. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर: लेख और भाषण" - वसंत मून द्वारा संपादित
2. "डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर: शिक्षा और सशक्तिकरण" - योगेश अटल द्वारा
3. "आंबेडकर और शिक्षा" - शैलजा पाइक द्वारा
4. "डॉ. बी.आर. आंबेडकर की शैक्षिक दर्शन" - एम.एस. चौहान द्वारा
5. "जातिक नाश के लिए शिक्षा: डॉ. बी.आर. आंबेडकर के लेख और भाषण" - राजेंद्र वोरा द्वारा संपादित
6. "बी.आर. आंबेडकर और शिक्षा" - एम.जी. नायक द्वारा
7. "शिक्षा और सशक्तिकरण: आंबेडकर की दृष्टि" - पुनम साबल द्वारा
8. "डॉ. अम्बेडकर की शैक्षिक विचारधारा" - आर.पी. सिंह द्वारा
9. "डॉ. अम्बेडकर के शिक्षा दर्शन" - एम.एस. गोर द्वारा
10. "शिक्षा पर आंबेडकर और उनके विचार" - दी.एन. धनागरे द्वारा

© 2024, IRJEdT Volume: 06 Issue: 04 |April-2024